



मार्च 2019

वर्ष : 2 अंक : 6

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर



निदेशक की कलम से



मैं आप सभी के समक्ष इस माह में प्रकाशित हिंदी समाचार पत्रिका प्रस्तुत करने जा रहा हूँ। इस पत्रिका के माध्यम से हमारा संस्थान मछलियों और जलीय पर्यावरण के ऊपर हो रहे शोध और विकास कार्यों को जनमानस तक पहुँचाने का प्रयास करता रहता है इसी कड़ी में हम इस बात को अपना सर्वोत्तम दायित्व मानते हैं कि मत्स्य कृषकों, चाहे वह पुरुष हो या महिलायें, उनके सामाजिक और आर्थिक विकास

के लिए हम हमेशा कार्यरत हैं। जिसके फलस्वरूप इस माह संस्थान द्वारा विकसित चार प्रौद्योगिकियों का मानकीकरण किया गया जिससे छोटे मत्स्य कृषक भी लाभान्वित हो सकेंगे। संस्थान अपनी तकनीकों और मात्स्यिकी शोध कार्यों को मत्स्य अधिकारियों, मत्स्य कृषको, हितधारको और छात्रों तक विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा पहुँचता रहता है जिसका संक्षिप्त विवरण इस पत्रिका में दिया गया है। संस्थान एवं उसके क्षेत्रीय केन्द्रों की गतिविधियाँ इतनी व्यापक स्तर पर की जाती हैं ताकि सबको इसका लाभ मिले। इसी क्रम में भारत सरकार के कई मंत्रीगण संस्थान के क्रियाकलापों से समय समय पर जुड़ते रहते हैं जिससे हमारा मनोबल बढ़ता है और उनके मार्गदर्शन से हम अपने कार्यों को सही दिशा दे पाते हैं। संस्थान की अनेकानेक गतिविधियों की जानकारी अब आप सभी को विभिन्न मीडिया (समाचार पत्र, ऑनलाइन, टीवी, रेडियो और अन्य) के द्वारा भी हम उपलब्ध करवाने का प्रयास करते रहते हैं। ये समाचार पत्रिका संस्थान के कार्यों और उपलब्धियों को संक्षिप्त तौर पर आप सब तक पहुँचाती रहती है। जैसा की सर्वविदित है कि हाल ही में 14 फरवरी 2019 के दिन कुछ आतंवादियों द्वारा बेहद कारगराना हरकत की गयी जिसके कारण भारत देश ने अपने 40 वीर सपूतों को खो दिया। इसकी जितनी आलोचना की जाए कम है और भाकृअनुप - केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसन्धान संस्थान इस हमले की कड़े शब्दों में निंदा करता है और आहत परिवारों के सदस्यों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करता है। मात्स्यिकी, पर्यावरण और कृषको के हित में जारी शोध और विकास कार्य हेतु हमारे सब प्रयासों के बावजूद हमें आपका सहयोग और मार्गदर्शन हमेशा मिलता रहेगा इसी कामना के साथ मैं आपका धन्यवाद करता हूँ।

विक्रम

मुख्य शोध उपलब्धियां

- ❖ नर्मदा नदी के सरदार सरोवर बांध के निचले भाग में प्रथम बार सात नई प्रजातियों की उपस्थिति देखी गयी जिसमें अवस ग्रामेपोमस (ब्लेकर 1849), प्लांटोसस्केनियस (हैमिल्टन 1822), श्रीसा स्टैनोसोमा (वोंगरतना 1983), तकिफुगु ओबॉन्वास (बलोच 1786), ऑलोपारिएसेलटा (डे. 1873) और कारैंगोइड्स फेरडौ (फोर्सस्कल 1775) प्रमुख थी।
- ❖ कार्लसन ट्रॉफिक इंडेक्स (1977), के अनुसार, सरदार सरोवर बांध के गुजरात क्षेत्र के जल निकायों में घुलित पोषक तत्व और पादप का घनत्व अधिक पाया गया है। प्राप्त रिपोर्ट के अनुसार, जनवरी 2019 के मध्य में डाइक और नहर क्षेत्र के वडगाँव नमूना स्टेशन में प्रचुर संख्या में मछलियों की मृत्यु हुई है। दिनांक 2 से 6 फरवरी 2019 के दौरान किए गए सर्वेक्षण में यह देखा गया कि प्रतिदिन लगभग 5 से 10 कि.ग्रा. मछलियों की मृत्यु हुई। इस दौरान, पानी में कम घुलित ऑक्सीजन और फास्फोरस का स्तर उच्च देखा गया।
- ❖ पश्चिम बंगाल के मथुरा बील में इंडियन मेजर कार्प का उत्पादन 160 कि.ग्रा. प्रति 100 वर्ग मी. प्रति 90 दिन दर्ज किया गया। लगभग 90 दिनों में लेबीओ बाटा 2.72 ग्रा. से 15 ग्रा. तथा सिस्टोमस सराना 2.12 ग्रा. से 9 ग्रा. तक की वृद्धि देखी गई। समान अवधि में भी गुडूसीया चपरा की बड़ी मछलियों की वृद्धि घेरे के अन्दर 9.5 ग्रा. से 14.5 ग्रा. दर्ज कि गई जो यह बताता है कि देशी मत्स्य प्रजातियों के संरक्षण के लिए यह उपयुक्त पालन प्रणाली है।
- ❖ संस्थान द्वारा विकसित चार प्रोद्योगिकी, सिफरी जीआई केज (CIFRI GI CAGE[®]), केजग्रो (CAGEGROW[®]), सिफरी पेन एचडीपीई (CIFRI PEN HDPE[®]) और सिफलिन (CIFLIN[®]) का मानकीकरण भारत सरकार के ट्रेड मार्क रजिस्ट्री, मुंबई के अंतर्गत हुआ।
- ❖ ताप्ती नदी के ऊपरी, मध्य और निचले क्षेत्र में पायी जाने वाली बेंथिक प्रजातियों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। इसमें यह पाया गया कि सबसे अधिक प्रचुरता डिप्टेरा प्रजातियों की थी। इसके बाद ओलिगोकिट और गैस्ट्रोपोड आते हैं। डिप्टेरा और ओलिगोकिट प्रजातियों की उपस्थिति यह बताते हैं कि निचले क्षेत्र कि तुलना में ऊपरी और मध्य क्षेत्र का जल अधिक प्रदूषित था।
- ❖ बिहार के चंपारण जिले के कररिया मान में आर्द्र क्षेत्र विकास कार्यक्रम के अंतर्गत संस्थान द्वारा विकसित तकनीकों से मछली उत्पादन में वृद्धि हुई है। वर्ष 2017-18 में जो उत्पादन 500

कि.ग्रा. प्रति हे. प्रति वर्ष था वह 2018-19 में बढ़ कर 750 कि.ग्रा. प्रति हे. प्रति वर्ष हो गया।

- ❖ ओडिशा में 'भारत-यूरोपीय संघ जल भागीदारी-आई.ई.डब्ल्यू.पी. कार्यक्रम' के तहत महानदी डेल्टा दौरा 28 जनवरी, 2019 को आयोजित किया गया इसमें संस्थान के वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

महत्वपूर्ण बैठकें

- ❖ संस्थान के निदेशक ने दिनांक 29 जनवरी 2019 को राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली में आयोजित विचार मंथन सत्र में भाग लिया।
- ❖ संस्थान के निदेशक ने दिनांक 31 जनवरी से 1 फरवरी 2019 को राष्ट्रीय कृषि विज्ञान परिषद, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली में आयोजित निदेशक सम्मेलन में भाग लिया।
- ❖ संस्थान के निदेशक ने दिनांक 2 फरवरी 2019 को मात्स्यिकी विज्ञान संभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली में आयोजित मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थानों के निदेशकों के साथ बैठक में भाग लिया।
- ❖ संस्थान ने दिनांक 4-5 फरवरी 2019 को आनंद कृषि विश्वविद्यालय, आनंद, गुजरात में आयोजित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की क्षेत्रीय समिति-IV की बैठक में भाग लिया।
- ❖ संस्थान के निदेशक ने दिनांक 7 फरवरी 2019 को मात्स्यिकी महाविद्यालय, किशनगंज (बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना के अधीनस्थ), बिहार सरकार की बैठक में भाग लिया।
- ❖ संस्थान ने दिनांक 9-11 फरवरी 2019 को मोतीहारी, बिहार में आयोजित कृषि कुम्भ 2019 में भाग लिया।
- ❖ संस्थान ने दिनांक 10 फरवरी 2019 को राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड, हैदराबाद द्वारा आयोजित पिंजरे में मछली पालन संबन्धित तकनीकी मूल्यांकन समिति बैठक में भाग लिया।
- ❖ संस्थान के गुवाहाटी अनुसंधान केंद्र में दिनांक 11 फरवरी 2019 को पंचवर्षीय समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया जिसमें इस समिति के अध्यक्ष तथा सदस्यों के साथ संस्थान के निदेशक और केंद्र के वैज्ञानिकों का विचार-विमर्श हुआ।
- ❖ संस्थान के जलाशय एवं आर्द्रक्षेत्र मात्स्यिकी के प्रभागाध्यक्ष ने दिनांक 18 फरवरी 2019 को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, राष्ट्रीय मत्स्य आनुवांशिक संसाधन ब्यूरो, लखनऊ द्वारा आयोजित 33वीं संस्थान प्रबंधन समिति बैठक में भाग लिया।

संस्थान की अनुसंधान सलाहकार समिति की बैठक

संस्थान की अनुसंधान सलाहकार समिति (आरएसी) की बैठक 4 फरवरी और 5 फरवरी, 2019 को आयोजित की गई। आरएसी के अध्यक्ष प्रो. (डॉ.) बी. मधुसूदन कुरुप, अन्य आरएसी सदस्य डॉ. एच.सी. जोशी, डॉ. जी. एन. चट्टोपाध्याय, डॉ. शिवप्रकाश एस. एम. और डॉ. पी. प्रवीण सहायक महानिदेशक (समुद्री और अन्तर्स्थलीय मत्स्य) ने बैठक में भाग लिया। पहले दिन निदेशक डॉ. बि. के. दास



ने पिछले एक वर्ष के दौरान संस्थान की समग्र उपलब्धियों को प्रस्तुत किया। विभागों, क्षेत्रीय केंद्रों, स्टेशनों और इकाइयों के प्रमुखों ने अपने संबंधित प्रभागों, इकाइयों और केंद्रों में संस्थान की चल रही विभिन्न परियोजनाओं और अन्य गतिविधियों के तहत उपलब्धियां प्रस्तुत कीं। दूसरे दिन, भाकृअनुप नेटवर्क और आउटरीच से संबंधित मुख्य अन्वेषक द्वारा अलग-अलग परियोजनायें प्रस्तुत की गयी। अध्यक्ष प्रो कुरुप और अन्य सदस्यों ने समग्र प्रगति में संतोष व्यक्त किया और संस्थान द्वारा की गई विभिन्न पहलों की भी सराहना की। अंत में, अध्यक्ष और सदस्यों ने अपनी समापन टिप्पणी की और कुछ बिंदु सुझाए जो अनुसंधान सलाहकार समिति की सिफारिशों के रूप में तैयार



किए जाएंगे। निदेशक डॉ. बि. के. दास ने अध्यक्ष और सभी सलाहकार समिति सदस्यों, और उपमहानिदेशक डॉ. प्रवीण को उनके बहुमूल्य सुझावों और टिप्पणियों के लिए धन्यवाद दिया जो संस्थान को और अधिक गौरव प्राप्त करने के प्रयास करने में मदद करेंगे। डॉ सुबीर कुमार नाग, सदस्य सचिव अनुसंधान सलाहकार समिति, के द्वारा अंत

में दिए गए धन्यवाद के औपचारिक ज्ञापन के साथ अंत में बैठक समाप्त हो गई।



राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड द्वारा प्रायोजित “रोज़गार सृजन के लिए जलाशय में मत्स्य प्रबंधन” पर तीन दिवसीय कौशल विकास कार्यक्रम

5-7 फरवरी, 2019 के दौरान कृष्णागिरि, तमिलनाडु में राष्ट्रीय मत्स्य



विकास बोर्ड (राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड) द्वारा प्रायोजित “रोज़गार सृजन के लिए जलाशय में मत्स्य प्रबंधन” पर तीन दिवसीय कौशल विकास कार्यक्रम, का आयोजन संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र बैंगलोर द्वारा किया गया। संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के. दास इस कार्यक्रम के पाठ्यक्रम निदेशक और प्रमुख वैज्ञानिक और प्रभारी अधिकारी डॉ.



प्रीता पणिकर, इस कार्यक्रम की सह-पाठ्यक्रम निदेशक थी। इस कार्यक्रम में कृष्णागिरि बांध के मछुआरे और मछली पालको ने भाग लिया। श्री एम.कार्तिकेयन, वैज्ञानिक (एसजी), भाकृअनुप, केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र बैंगलोर ने सभा का स्वागत किया और संस्थान द्वारा उत्पन्न प्रौद्योगिकी के बारे में जानकारी दी। पी. जेनेफर, कृष्णागिरि मत्स्य विभाग के उप निदेशक, ने दीप जलाकर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन संबोधन में उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि जलाशयों में पालन आधारित मत्स्य



पालन और पिंजरा पालन के माध्यम से इस विशाल जल संसाधनों के उपयोग की काफी संभावनाएं हैं और इससे मछुआरों को वैकल्पिक आय उत्पन्न करने में मदद मिलेगी। डॉ. प्रीता पणिकर ने जलाशय मत्स्य प्रबंधन में संस्थान की भूमिका के बारे में बताया। डॉ. पी. चिदंबरम, सह प्रोफेसर, तिलपिया शोध केंद्र, कृष्णागिरी निरस्त्रीकरण ने रोजगार के अवसरों और जीवित मत्स्य विपणन के बारे में बताया। श्रीमती वी. एल. राम्या ने संलग्न आय और स्थायी आय सृजन के लिए महत्वपूर्ण स्वदेशी मछलियों को स्थानीय रूप से पालन प्रणाली में



मछली विपणन शुरूआत के बारे में जानकारी दी। कृष्णागिरि बांध में पिंजरों को दिखने के लिए मछुआरों को एक क्षेत्रीय दौरे पर ले जाया गया और उन्हें पिंजरा पालन प्रणाली को समझाया गया। श्री एम.

कार्तिकेयन, श्रीमती वी. एल. राम्या और श्रीमती सिबीना मोल एस. ने कार्यक्रम का समन्वय किया।

बिहार में मछुआरों की आय को दोगुना करने के लिए मौन में मत्स्य प्रबंधन पर कोठिया मौन, पूर्वी चंपारण, में राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड द्वारा प्रायोजित कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम

संस्थान ने बिहार के मौन मछुआरों के लिए 'मछुआरों की आय दोगुनी करने के लिए मौन में मत्स्य प्रबंधन पर तीन दिनों का राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड प्रायोजित कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया, जिसका उद्घाटन कोठिया मौन, तेतरिया ब्लॉक, पूर्वी चंपारण जिले में किया गया। कार्यक्रम का आयोजन भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर के निदेशक डॉ. वि.



के. दास (पाठ्यक्रम निदेशक) के मार्गदर्शन में किया गया था। इस अवसर पर तेतरिया ब्लॉक के बीडीओ श्री चंद्र भूषण कुमार समारोह के मुख्य अतिथि थे। श्री गणेश चंद्र, पाठ्यक्रम समन्वयक ने सभा का



स्वागत किया और कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी और कोठिया मौन में चल रहे राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड प्रायोजित आर्द्रभूमि विकास परियोजना के बारे में भी बताया। डॉ. एम. ए. हसन, प्रधान वैज्ञानिक ने बिहार के मौन में पालन आधारित मत्स्य पालन के बारे में जानकारी दी। तेतरिया के बीडीओ श्री चंद्र भूषण कुमार ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि किसानों की आय को दोगुना करने के लिए केंद्र सरकार और राज्य सरकार द्वारा संचालित ने कई कार्यक्रमों के बारे में प्रतिभागियों को अवगत कराया। उन्होंने कहा कि

भाकृअनुप, केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर द्वारा मौन मछुआरों की क्षमता निर्माण के लिए उनकी आय दोगुनी करने के लिए यह प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है जिसका मछुआरों को पूरा-पूरा फायदा उठाना चाहिए। उन्होंने पूर्वी चंपारण जिले के मछुआरों के लाभ के लिए मौन स्थल पर इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के



आयोजन के लिए संस्थान की बैरकपुर टीम को बधाई दी। डॉ. सुमन कुमारी, वैज्ञानिक ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कोठिया मौन के पचास मछुआरों ने भाग लिया। यह कार्यक्रम गणेश चंद्र और डॉ. एम. ए. हसन द्वारा समन्वित किया गया है और सुमन कुमारी और राजू बैठा इस कार्यक्रम के सह समन्वयक थे।

12-13 फरवरी, 2019 के दौरान गुवाहाटी में संस्थान मुख्यालय बैरकपुर द्वारा आयोजित "उत्तर पूर्वी क्षेत्र में खुले जल मात्स्यिकी प्रबंधन" पर एक संवादात्मक कार्यशाला



भाकृअनुप, केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, ने 12-13 फरवरी, 2019 के दौरान उत्तर पूर्वी क्षेत्र में खुले जल मात्स्यिकी प्रबंधन पर एक संवादात्मक कार्यशाला का आयोजन किया, जो संस्थान के उत्तर पूर्वी घटक के तहत अपने क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी में है। मत्स्य निदेशालय का प्रतिनिधित्व करने वाले कुल 60 अधिकारी, असम, मेघालय और अरुणाचल प्रदेश से; असम मत्स्य विकास निगम लिमिटेड, गुवाहाटी; असम के राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड पूर्वोत्तर क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी; नाबार्ड असम क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी और

भाकृअनुप - केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर के वैज्ञानिकों / शोधकर्ताओं ने कार्यक्रम में भाग लिया।

कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन से हुई। डॉ. बी.के.भट्टाचार्य भाकृअनुप, केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर,



के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी के प्रभारी ने कार्यशाला में आए प्रतिभागी और गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया। कार्यशाला की अध्यक्षता भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, के निदेशक डॉ. बि. के. दास ने की। उन्होंने कार्यशाला की पृष्ठभूमि और उद्देश्य के बारे में बताया और स्थायी रूप से मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए इस क्षेत्र में खुले पानी की मछलियों के पालन पर जोर दिया। डॉ. एस. सी. पाठक, पूर्व मुख्य महाप्रबंधक (सीजीएम), नाबार्ड क्षेत्रीय कार्यालय, पुणे ने मुख्य अतिथि के रूप में समारोह की अध्यक्षता की।



उन्होंने क्षेत्र के सभी राज्य मत्स्य विभागों से सभी अनुसंधान एवं विकास एजेंसियों के ठोस प्रयासों के माध्यम से मछली उत्पादन में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के साझा लक्ष्य के साथ एकजुट होकर काम करने का आग्रह किया। डॉ। उषा मोजा पूर्व प्रधान वैज्ञानिक, मात्स्यिकी विभाग, भाकृअनुप, नई दिल्ली ने सम्मानीय अतिथि के रूप में समारोह में भाग लिया। उन्होंने सभी उपलब्ध मत्स्य संसाधनों का उपयोग करके मछली उत्पादन में उत्तर पूर्वी क्षेत्र को आत्मनिर्भर बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया। श्री पी. के. हजारिका (परियोजना निदेशक, एएफडीसी लिमिटेड, गुवाहाटी), श्री जे. के. सामल (डीजीएम, नाबार्ड क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी) और सुश्री दीपमाला रॉय (अधिकारी प्रभारी, राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड, क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी) ने इस समारोह में अतिथि के रूप में भाग लिया।

कार्यशाला के तकनीकी सत्र की अध्यक्षता डॉ.एस.सी.पाठक ने की। डॉ. बि. के. दास ने "भारत के खुले पानी के मत्स्य संसाधनों के विकास में भाकृअनुप, केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर की भूमिका" विषय पर कार्यशाला में व्याख्यान दिया। डॉ. बी.

चार दशकों के बाद गंगा नदी में हिल्सा मत्स्य को फिर से स्थापित करने की दिशा में संयुक्त प्रयास

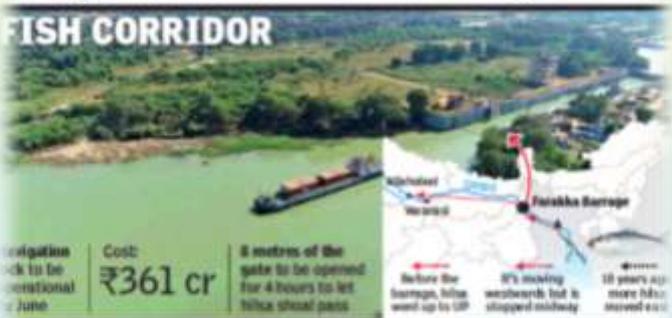
भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, इनलैंड वाटरवेज अथॉरिटी ऑफ इंडिया (IWAI), सेंट्रल वाटर कमीशन (CWC), नेशनल मिशन फॉर क्लीन गंगा (NMCG) और फरक्का बैरक अथॉरिटी (FBA) के साथ जल संसाधन मंत्रालय, गंगा कायाकल्प गंगा



विकास, गंगा नदी के मध्य हिस्सों में हिल्सा मत्स्य को फिर से स्थापित करने में शामिल है। हैमिल्टन (1822) ने सबसे पहले कानपुर और आगरा के पास गंगा और यमुना नदी में हिल्सा दर्ज की। यह प्रजाति 1975 के दौरान फरक्का बैराज के निर्माण तक गंगा नदी में अच्छी मात्रा में पायी जाती थी। फरक्का बैराज के निर्माण के तुरंत बाद, विशेष रूप से फरक्का से इलाहाबाद तक गंगा नदी के मध्य हिस्सों में हिल्सा पकड़ में तेजी से गिरावट आई और हाल के वर्षों में लगभग समाप्ति की तरफ पहुँच गई। भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर द्वारा किए गए एक हालिया अध्ययन में गंगा नदी में हिल्सा मत्स्य की पुनः स्थापना की कुछ सिफारिशें नीति निर्माताओं के लिए तैयार की गईं और उन्हें महत्वपूर्ण जल हितधारकों के

प्रबंधकों जैसे कि सीडब्ल्यूसी, आईडब्ल्यूआई, और एनएमसीजी को प्रदान की गई। इसमें दो महत्वपूर्ण सिफारिशें थीं (1) फरक्का बैराज में उपलब्ध दो अवरोध (फिश लॉक) नियमित रूप से मॉनसून के दौरान गंगा नदी के उपरी भाग में हिल्सा मत्स्य पुनःस्थापना के लिए, संचालित किए जाने चाहिए और (2) हुगली-भागीरथी नदी से हिल्सा के प्राकृतिक उपरी भाग में प्रवास की सुविधा के लिए मौजूदा नौवहन चैनल के पश्चिमी भाग में गंगा नदी की नहर और नदी के ऊपर फीडर के बीच एक बाईपास चैनल बनाया जाना चाहिए। माननीय केंद्रीय मंत्री, सड़क परिवहन और राजमार्ग, जल संसाधन, नदी विकास और गंगा कायाकल्प, श्री नितिन गडकरी, की अध्यक्षता में नदी जैव विविधता और हिल्सा मत्स्य के महत्व को समझते हुए, आईडब्ल्यूआई, सीडब्ल्यूसी, एफबीए और भाकृअनुप, केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में दो उच्च स्तरीय बैठकें आयोजित की गईं। और यह तय किया गया था कि भाकृअनुप, केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर मछली के मार्ग के उपयुक्त डिजाइन के लिए हिल्सा व्यवहार और प्रवासन पैटर्न पर वैज्ञानिक सूचना प्रदान करेगा। संस्थान के निदेशक डॉ.बि.के.दास के नेतृत्व में, नौवाहन ताला के माध्यम से गंगा नदी में निर्बाध यातायात के लिए हिल्सा पर सभी आवश्यक जैविक जानकारी प्रदान की गई है, जिसे आईडब्ल्यूआई द्वारा संचालित जून 2019 में किया जाना है। इसकी जानकारी हाल ही में माननीय केंद्रीय मंत्री श्री नितिन गडकरी के प्रयागराज यात्रा के दौरान दी गयी है। यह नई नेविगेशनल लॉक सुविधा, हुगली-भागीरथी नदी से गंगा नदी के मुख्य चैनल के लिए हिल्सा के प्रवास का समर्थन करेगी। गंगा नदी में हिल्सा मत्स्य पालन को फिर से स्थापित करने की दिशा में किये जा रहे प्रयासों को विशेष रूप से कई प्रमुख समाचार पत्रों जैसे कि टाइम्स ऑफ इंडिया, द इकोनॉमिक्स टाइम्स और द फाइनेंशियल एक्सप्रेस में अगले दिन ही प्रकाशित किया गया।

40 yrs on, hilsa will swim up to Allahabad again



Spak.Dash@timesgroup.com

New Delhi: In June 2016, someone forked out Rs 22,000 for a 4 kg hilsa in Bengal's Howrah. The fish, that had swum down from Myanmar, was indeed a prize catch: It's rare to find hilsas that large, but the price the shining fish fetched at a bustling wholesale market in Howrah was the ultimate gastronomic measure of how far a fish lover would go to have the bony hilsa on his plate.

Now after a gap of over 40 years, the hilsa will be able to swim up to Allahabad this monsoon. That had been possible till a barrage was built across the Ganges at Farakka in Bengal in the 70s. The barrage came with a navigation lock that blocked the free movement of Hilsas. Shipping and

tin Gadkari said on Friday that this was being done as a part of the efforts to preserve the biodiversity of Ganga.

This lock has now been redesigned to ensure smooth and safe migration of the hilsa shoal during the three mating seasons, particularly during monsoon. A navigation lock is a device that is used to raise and lower boats and ships between stretches of water on a river.

"We will open the gates for only eight metres and between 1 am and 5 am, which is the preferred time when Hilsa seeks passage. This provision has been made in consultation with ICAR Central Inland Fisheries Research Institute, Central Water Commission and Farakka Barrage Project Authority. We have designed this in-house and have saved about

way Authority of India (IWAI) vice-chairman Praveer Pandey told TOI.

Hilsa has a history of migrating from Bangladesh to Allahabad down the Ganga. Though it's a salt water fish, it migrates from the Bay of Bengal to the sweet waters of the Ganges. "Fish often disperse widely over large areas while feeding and spawning. This hilsa migration will lead to an increase in its production in the region. This will also increase the river's biodiversity and boost the economy of local fishermen," a shipping ministry spokesperson said.

In recent years, overcatch of hilsa has reduced its spawning, pollution and overfishing have taken their toll on fishstocks. The navigation lock being built at a cost of Rs 361 crore as a part of the

विशेष समाचार

माननीय मंत्री श्री नितिन गडकरी ने मछलियों के उन्नत प्रजाति के बीजों को गंगा नदी में प्रवाहित किया

माननीय श्री नितिन गडकरी, केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री, भारत सरकार एवं नमामि गंगे परियोजना के मार्गदर्शक ने दिनांक 8 फरवरी 2019 को कुम्भ मेले के अपने प्रवास के दौरान, भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यकी अनुसंधान संस्थान के इलाहाबाद केंद्र द्वारा आयोजित रैंचिंग कार्यक्रम के अन्तर्गत विलुप्त हो रही कतला, रोहु और नैन मछलियों के उन्नत प्रजाति के बीजों को गंगा नदी में प्रवाहित किया। उन्होने संस्थान के वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए उनकी नमामि गंगे परियोजना की भागीदारी के लिए सराहना की। संस्थान के केन्द्राध्यक्ष डा. रमा शंकर श्रीवास्तव ने माननीय मंत्री के प्रति आभार व्यक्त किया कि उन्होनें अपने व्यस्त कार्यक्रम



से अमूल्य समय निकाल कर इस कार्यक्रम में उपस्थित हुये। संस्थान के वैज्ञानिको ने भी इस अवसर पर गंगा नदी में उपरोक्त प्रजातियों के दस हजार बीज संगम में प्रवाहित किये। इस कार्यक्रम के दौरान संस्थान के वैज्ञानिकों ने एक सभा का भी आयोजन किया जिसमें वहाँ पर उपस्थित सभी श्रद्धालुओं एवं मछुआरा समुदाय के सदस्यों ने भाग



लिया। संस्थान के वैज्ञानिकों ने माननीय मंत्री महोदय को विस्तार सहित नमामि गंगे परियोजना के उद्देश्यों, गंगा नदी की दुर्दशा और उसके विलुप्त हो रहे जलीय जीव जन्तुओं के कारण और निवारण के बारे में अवगत कराया।



भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर को ट्रेड मार्क

भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने मुंबई स्थित भारत सरकार के ट्रेड मार्क रजिस्ट्री में "भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद" के नाम से CAGEGROW® CIFRI GI CAGE® CIFRI PEN HDPE® CIFLIN® नामक चार तकनीकों के सफलतापूर्वक ट्रेडमार्क पंजीकृत किए ।



1 ट्रेडमार्क नं. 3625921 CAGEGROW® (सर्टिफिकेट नं. 1843046 25 अप्रैल 2018 को सील) को ट्रेडमार्क जर्नल नंबर: 1827 में दिसंबर 2017 में प्रकाशित किया गया था और अगस्त 2027 तक वैध है। CAGEGROW® ट्रेडमार्क क्लास 31 के तहत मछली फीड, पशु फीड के रूप में पंजीकृत है।

2 ट्रेडमार्क नंबर 3852538 CIFRI PEN HDPE® (प्रमाण पत्र संख्या 2085291 27 जनवरी 2019 को सील) ट्रेडमार्क जर्नल नंबर: 1866 में प्रकाशित हुआ था और जून, 2028 तक मान्य है। CIFRI PEN HDPE® को ट्रेडमार्क पेन 22 के रूप में पंजीकृत किया गया है, जो नेट पेन है। मछली पालन के लिए मछली पकड़ने का जाल।

3 ट्रेडमार्क नंबर 3852537 CIFRI GI CAGE® (प्रमाण पत्र संख्या 2085292 27 जनवरी 2019 को सील किया गया) ट्रेडमार्क जर्नल नंबर: 1866 में प्रकाशित हुआ था और जून, 2028 तक मान्य है। CIFRI GI CAGE® को ट्रेडमार्क पेन 22 के तहत पंजीकृत किया गया है, जो नेट पेन है। मछली पालन के लिए, मछली पकड़ने का जाल।



4 ट्रेडमार्क नं. 3852539 और 3852540 CIFLIN® (सर्टिफिकेट नंबर 2045488 8 दिसंबर 2018 को सील और 27 जनवरी 2019 को 2085290 सील किया गया) ट्रेडमार्क जर्नल नंबर 1859 और 1866 में दो वर्गों के तहत पंजीकृत किया गया है और जून 2028 तक मान्य है। CIFLIN® ट्रेडमार्क के तहत पंजीकृत है। वर्ग 1, के तहत मछली में फार्मलाडेहाइड रासायन मिलावट का पता लगाने के लिए और ट्रेडमार्क वर्ग 9 के तहत खाद्य विश्लेषण उपकरण के रूप में।

माननीय सांसद डॉ. प्रसन्न कुमार पाटसाणी जी अध्यक्ष संसदीय राजभाषा समिति, ने मछलियों के उन्त प्रजाति के बीजों को गंगा नदी में प्रवाहित किया



दिनांक 26 फरवरी 2019 को कुम्भ मेले में अपने प्रवास के दौरान माननीय सांसद श्री प्रसन्न कुमार पाटसाणी जी अध्यक्ष संसदीय राजभाषा समिति ने संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, इलाहाबाद द्वारा आयोजित रैचिंग कार्यक्रम के अन्तर्गत विलुप्त हो रही कतला, रोहु और नैन मछलियों के उन्त प्रजाति के बीजों को गंगा नदी में छोड़ा। इस दौरान माननीय अध्यक्ष पाटसाणी साहेब के साथ उनकी कमेटी के सदस्य मसलन सत्येन्द्र कुमार सिंह, विकास वर्मा, किरण पाल सिंह, विनय कुमार और अब्दुल मोहिद राज्य सभा भारत सरकार की तरफ से शामिल हुए। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक, नमामि गंगे के उत्तर प्रदेश इकाई के प्रभारी और डॉ. पी प्रवीण, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित थे। पाटसाणी जी ने संस्थान के वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए उनकी नमामि गंगे

परियोजना की भागीदारी के लिए सराहना की। माननीय सांसद के कार्यक्रम में अमूल्य समय निकाल कर भागीदारी के लिए संस्थान के केन्द्राध्यक्ष डॉ. रमा शंकर श्रीवास्तव ने संस्थान के वैज्ञानिकों की ओर से उनका आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर गंगा नदी में उपरोक्त प्रजातियों के पन्द्रह हजार बीज संगम पर छोड़े गए। इस कार्यक्रम के दौरान संस्थान के वैज्ञानिकों ने एक आम सभा का आयोजन किया जिसमें वहां पर उपस्थित सभी श्रद्धालु एवम् मछुआरा समुदाय के सदस्यों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का संचालन केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा किया



गया। माननीय सांसद पाटसाणी जी ने विस्तार से नमामि गंगे परियोजना के उद्देश्यों, गंगा नदी की दुर्दशा और उसके विलुप्त हो रहे जलीय जीव जन्तुओं के कारण और निवारण के बारे में अवगत कराया। वैज्ञानिकों का मानना था कि गंगा नदी के प्रवाह में अविरलता, निर्मलता एवम् जल की सतत उपलब्धता न होना इसका प्रमुख कारण है। ऐसा इसलिए है कि गंगा नदी में बढ़ता हुआ प्रदूषण और अनगिनत बांधों के अम्बार गंगा को बाधित कर रहा है। परिणामस्वरूप गंगा की मछलियों के प्रजनन पर भारी असर पड़ा है जिससे गंगा नदी की जैव विविधता और मछलियों की संख्या प्रभावित हुई है और बहुत सी मछलिया विलुप्तप्राय हो गई हैं। इस संदर्भ में हमने सांसद महोदय से आग्रह

किया कि वो प्रभावकारी नीतिगत निर्णय ले कर प्रदूषण पर रोक लगाए। वक्ताओं का यह कहना था कि गंगा महज पानी की धारा नहीं है अपितु यह सदियों से चली आ रही धर्म, संस्कृति और सभ्यता का धरोहर है और यह हजारों मछुआरों के जीविका का आधार है। पाटसाणी जी ने इस पर विस्तार से चर्चा की। अन्त में अपने सम्बोधन के दौरान निदेशक महोदय ने नमामि गंगे मिशन के अन्तर्गत तो गंगा की जैव विविधता के संरक्षण और पुनरुत्थान के बारे में अपना विचार रखा। इसके पश्चात माननीय सांसद ने अपने सहयोगी सांसद और अन्य अधिकारियों के साथ संस्थान के हिन्दी कार्यों की समीक्षा की और संस्थान के हिन्दी में किये जा रहे कार्यों पर हर्ष व्यक्त किया।



के. भट्टाचार्य, ने "उत्तर पूर्वी क्षेत्र के खुले जल मात्स्यिकी संसाधनों के वैज्ञानिक मत्स्य प्रबंधन के लिए रणनीतियाँ" पर एक व्याख्यान दिया। नाबार्ड के श्री जे. के. समल, राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड के डॉ. बी. लाहोन, डॉ. एस. येंगकोकम, डॉ. प्रोनोब दास और संस्थान के डॉ.



एस. बोराह ने संस्थागत वित्त आलेख, राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड समन्वित योजनाएं, पेन कल्चर, केज कल्चर और खुले जल के संचयन में वृद्धि, आदि विभिन्न विषयों में व्याख्यान दिए।

कार्यशाला का वैध सत्र मुख्य अतिथि डॉ. एस.सी.पाठक, पूर्व मुख्य महाप्रबंधक, नाबार्ड क्षेत्रीय कार्यालय, पुणे द्वारा आयोजित किया गया था। उन्होंने मछुआरों से सीखने और दृष्टिकोण में नवीनता लाने पर जोर



दिया। डॉ. ए. के. त्रिपाठी, निदेशक, एएटीआरआरआई, जोन-VI, गुवाहाटी ने सम्मानीय अतिथि के रूप में समारोह में भाग लिया। उन्होंने क्षेत्र में कृषि विज्ञान केंद्र के माध्यम से मछुआरों के प्रशिक्षण,



अधिकारियों के क्षमता निर्माण और विकासात्मक गतिविधियों के लिए पूर्ण समर्थन देने का आश्वासन दिया। डॉ. बी. लाहोन, वरिष्ठ सलाहकार, राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी ने आमंत्रित अतिथि के रूप में समारोह की अध्यक्षता की। उन्होंने क्षेत्र में खुले जल मात्स्यिकी के विकास के लिए राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड से वित्तीय सहायता देने का आश्वासन दिया। केंद्र के आयोजन सचिव और वैज्ञानिक डॉ. पी. दास ने दो दिनों की कार्यशाला की एक संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की। यह कार्यक्रम केंद्र के वैज्ञानिक श्री एस बोराह द्वारा प्रस्तावित धन्यवाद के औपचारिकता के साथ समाप्त हुआ।

संस्थान के निदेशक द्वारा ओडिशा के टेंकनाल के किसानों को सम्बोधन

ओडिशा का टेंकनाल जिला, सुंदर जंगली जीवन और जंगलों से घिरा हुआ है और जिले के लोग अपनी आजीविका के लिए कृषि और मत्स्य पालन पर निर्भर हैं। एनएचएम के तहत वार्षिक कार्य योजना 2018-19 के अन्तर्गत ओडिशा के 85 प्रगतिशील किसानों के एक समूह ने 15 फरवरी को संस्थान का दौरा किया, जिसमें उत्पादन वृद्धि



के लिए "अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर एक प्रदर्शन हुआ। संस्थान के निदेशक डॉ बसंत कुमार दास ने किसानों को संबोधित किया और संस्थान के विभिन्न अनुसंधानों और गतिविधियों पर एक अवलोकन प्रस्तुत किया। उन्होंने छोटे जलाशयों और चैक डेमों में मत्स्य पालन बढ़ाने पर भी ध्यान दिया। डॉ. अर्चना सिन्हा, प्रधान वैज्ञानिक ने किसानों की आय दोगुनी करने के लिए सजावटी मछली पालन पर



अपने विचार प्रस्तुत किये। प्रयोगशाला, सजावटी मछलियों की हैचरी और संस्थान की पुनः संचार प्रणाली भी किसानों द्वारा देखी गई। इस एक्सपोज़र विजिट का उद्देश्य प्रगतिशील किसानों के ज्ञान और दृष्टिकोण में वांछनीय बदलाव लाना था। डॉ. अपर्णा रॉय, वैज्ञानिक, विस्तार एवं प्रशिक्षण सेल, ने डेंकनाल, ओडिशा के प्रगतिशील किसानों के प्रशिक्षण कार्यक्रम को समन्वय किया।

संस्थान द्वारा रामनगर कॉलेज, पूर्व मिदनापुर, पश्चिम बंगाल के बी.एस.सी. के छात्र (FFM) के लिए अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन पर उन्मुखीकरण प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

रामनगर कॉलेज, पूर्व मिदनापुर, पश्चिम बंगाल के बीएससी (फिशरीज एंड फार्म मैनेजमेंट) के छात्रों (44) के लिए अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन पर 7 दिवसीय उन्मुखीकरण प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन, भाकृअनुप, केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर के मुख्यालय, में 12-18 फरवरी, 2019 को आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ बसंत कुमार दास ने छात्रों से आह्वान किया कि वे इस क्षेत्र में आधुनिक तकनीकों और प्रौद्योगिकी से आपने आप को अवगत कराएँ, जिससे निकट भविष्य में किसानों की आय दोगुनी करने में अपना सहयोग दे सकें। निदेशक महोदय ने छात्रों से यह भी कहा कि प्रशिक्षण अवधि के दौरान अपने



मूल्यवान समय का उचित उपयोग करें और यहाँ के वैज्ञानिकों से ज्यादा से ज्यादा सीखने की कोशिश करें। डॉ. बी.पी. मोहंती, विभागाध्यक्ष, एफआईएम विभाग और डॉ. यू. के. सरकार, विभागाध्यक्ष, आरडब्ल्यूएफ विभाग ने छात्रों के साथ संवादात्मक सत्र के दौरान मानव स्वास्थ्य के लिए आवश्यक छोटी स्वदेशी मछली प्रजातियों (एसआईएफएस) के पोषण मूल्यों के महत्व को दर्शाया। मछली की जैव विविधता जो क्रमशः हमारी नदी और अन्य अंतर्स्थलीय खुले जल मत्स्य संसाधनों में कमी के कारण है। खुले जल मात्स्यिकी संसाधनों के बारे में अच्छी तरह से परिचित कराने के लिए संस्थान में और साथ ही फील्ड विजिट का भी आयोजन किया गया। छात्रों को जैव प्रौद्योगिकी, नैनो-प्रौद्योगिकी, आरएएस प्रणाली, घेरे की संस्कृति, अंतर्स्थलीय जल संसाधनों के परिसीमन के लिए सुदूर संवेदन एवं भोगोलिक सूचना प्रणाली, तलछट-जल विश्लेषण के अलावा, रोग के लक्षणों, जैविक मछली प्रजनन प्रोटोकॉल, नदियों की पारिस्थितिकी सहित जैव-समुदायों

की पहचान के बारे में जागरूक किया गया। जलाशयों और बाढ़कृत अद्रच्छेत्रों में संस्थान द्वारा अपनाये जा रहे मत्स्य संवर्द्धन प्रोटोकॉल के बारे में अवगत कराया गया। उन्हें कोलकाता के सजावटी मछली के बाजार, सीवेज फीडेड फिशरीज, ईस्ट कोलकाता वेटलैंड्स (ईकेडब्ल्यू) के



पारिस्थितिक कामकाज से भी अवगत कराया गया, जिसमें नैहाटी के आसपास के प्रगतिशील किसानों की कुछ हैचर्स और बील सहित आस-पास के खुले बाढ़कृत अद्रच्छेत्रों के विभिन्न पहलुओं से परिचित कराया गया। अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन के अन्य पहलुओं को अधिक सीखने के तीव्र इच्छा को देखते प्रतिक्रिया सत्र किया गया।

लोकटक झील में संस्थान द्वारा आयोजित 'मणिपुर के बाढ़कृत मैदानों में घेरा मत्स्य पालन तकनीक' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

मणिपुर के बाढ़कृत आर्द्रभूमि में घेरे में मत्स्य पालन तकनीक पर ऑन-फील्ड प्रशिक्षण कार्यक्रम, संस्थान ने मणिपुर मत्स्य निदेशालय, मत्स्य विभाग, के सहयोग से 19 फरवरी, 2019 को बिष्टुपुर जिले के सेंदरा,



लोकटक, में आयोजित किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य पेन एकाकल्चर (घेरा मत्स्य पालन) तकनीक के विभिन्न पहलुओं पर मछुआरों को प्रशिक्षित करना था, जिसमें लोकटक के आसपास रहने वाले हजारों आर्द्रभूमि मछुआरों की आय और आजीविका में सुधार की अपार संभावनाएं हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 50 मछुआरों ने भाग लिया। यहां यह उल्लेखनीय है कि मणिपुर में 30,171 हेक्टेयर प्राकृतिक झीलें और बाढ़कृत मैदान हैं जो बड़े पैमाने पर अप्रयुक्त हैं और

बाड़े की संस्कृति प्रौद्योगिकियों के माध्यम से मछली उत्पादन बढ़ाने की उच्च क्षमता रखते हैं। मणिपुर राज्य में अंतर्स्थलीय मत्स्य संसाधनों के सतत उपयोग के लिए, भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ज्ञान भागीदार के रूप में और मणिपुर सरकार भागीदार के रूप में, सहयोगात्मक प्रयास कर रहे हैं।

संस्थान के बैरकपुर और गुवाहाटी के वैज्ञानिकों की एक टीम जिसमें डॉ. बसंत कुमार दास, निदेशक, डॉ. ए. के. दास, प्रधान वैज्ञानिक और प्रभारी प्रशिक्षण-विस्तार प्रकोष्ठ, डॉ. सोना योंगकोपम और डॉ. दीपेश देबनाथ, वैज्ञानिक, श्री खामसिंग अहुम, अतिरिक्त निदेशक और श्री श्यामानंद सिंह, जिला मत्स्य अधिकारी-बिष्णुपुर, मत्स्य विभाग,



मणिपुर सरकार की उपस्थिति में मणिपुर के मछुआरों के साथ पेन एक्वाकल्चर (घेरा मत्स्य पालन) तकनीक के बारे में विस्तार से चर्चा की। इस कार्यक्रम में श्री कुमार सिंह, अध्यक्ष और श्री सानैयमा, नेट फिशिंग को-ऑपरेटिव सोसाइटी के सचिव, तकू और मणिपुर के एक राष्ट्रीय मछली किसान पुरस्कार से सम्मानित श्री सुरचंद्र सिंह ने भी भाग लिया।

डॉ. बि. के. दास ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि उनका संस्थान मणिपुर के आर्द्रभूमि मछुआरों के लाभ के लिए मछली संस्कृति प्रौद्योगिकियों पर तकनीकी जानकारी प्रदान करने के लिए तैयार है। उन्होंने उल्लेख किया कि नेशनल मिशन ऑन हिमालयन स्टडीज (NMHS) के तहत, संस्थान ने लोकटक झील के



तकू में पेन एक्वाकल्चर लागू करने के लिए मत्स्यपालन विभाग, मणिपुर के साथ सहयोग किया है। उन्होंने मछुआरों से परियोजना को सफलतापूर्वक लागू करने में संस्थान के साथ हाथ मिलाने का आग्रह

किया, ताकि उपार्जित लाभ स्वयं मछुआरों द्वारा साझा किया जाए। हालांकि, उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि परियोजना के एक साल बाद, मछुआरों को अपनी बचत का उपयोग करके पेन एक्वाकल्चर जारी रखना होगा।

डॉ. ए. के. दास ने सभी मछुआरों प्रतिभागियों से पेन एक्वाकल्चर तकनीक का पूरा लाभ उठाने का अनुरोध किया, जो कि लोकटक झील के कुछ हिस्सों में अधिक मात्रा में मछली उत्पादन के लिए अपनाई जा सकती है। श्री खामसिंग अहुम और श्यामानंद सिंह ने प्रतिभागियों को चर्चा में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया है ताकि संस्थान के वैज्ञानिकों से पेन में मछली संस्कृति के बारे में वैज्ञानिक ज्ञान इकट्ठा किया जा सके।

डॉ. सोना योंगकोपम ने संलग्नक मछली पालन के तकनीकी पहलुओं के बारे में चर्चा की, जिसमें पेन स्थापना, मैक्रोफाइट हटाना, किस प्रजाति को संचयन करना है और कितने प्रति यूनिट क्षेत्र को संचयन करना है। उन्होंने जोर दिया कि पेन एक कम लागत वाली तकनीक है और अगर वैज्ञानिक दिशानिर्देशों का पालन किया जाए तो मछुआरों की आय में सुधार हो सकता है। डॉ. दीपेश देबनाथ, श्री एन. डोरेंडो सिंह और श्री टी. विक्टर अनल ने पेन बाड़ों में मछली की देखभाल के बारे में चर्चा की। श्री सुरचंद्र सिंह ने मछली पालन के बारे में अपना व्यक्तिगत अनुभव साझा किया।

समापन सत्र में, डॉ. सोना योंगकोपम ने प्रमाणपत्र वितरित करने के बाद संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के.दास; डॉ. ए.के. दास; डॉ. डी. देबनाथ; प्रायोजन एजेंसी एनएमएचएस - अल्मोड़ा; परियोजना के



प्रधान अन्वेषक डॉ. बी.के. भट्टाचार्य, मत्स्य निदेशक श्रीमती बिदारानी अयेकपम, अतिरिक्त निदेशक श्री खामसिंग अहुम, जिला मत्स्य अधिकारी (और मणिपुर में नोडल अधिकारी - एनएमएचएस परियोजना), अन्य मत्स्य अधिकारी, मीडिया और इस प्रशिक्षण को साझा करने, और बनाने के लिए मूल्यवान मछुआरों प्रतिभागियों को सार्थक बनाने के लिए धन्यवाद दिया।

संस्थान, में बैरकपुर गर्ल्स हाई स्कूल के छात्राओं का शैक्षिक दौरा

बैरकपुर गर्ल्स हाई स्कूल की छात्राओं द्वारा एक दिवसीय शैक्षिक दौरा 16 फरवरी, 2019 को किया गया ताकि युवा वर्ग को अपने भविष्य के साथ-साथ अपने परिवेश के बारे में जागरूक किया जा

सके। इस शैक्षिक प्रदर्शन में कुल 120 छात्रों ने भाग लिया। युवाओं को संबोधित करते हुए, संस्थान के निदेशक, डॉ. बसंत कुमार दास ने छात्रों से अपने समय का सदुपयोग करने का आग्रह किया और जितना वे अपने परिवेश के बारे में ज्ञान इकट्ठा कर सकते हैं उन्हें स्कूल के दिनों में ही करना चाहिए, और ऐसी यात्रा से सबक सीखना चाहिये जो उन्हें अपने भविष्य के पाठ्यक्रम को तैयार करने और उस को आकार देने में सक्षम



बनाता है। छात्रों को संस्थान की विरासत से अवगत कराया गया था, जिसमें संस्थान द्वारा युगांतरकारी प्रौद्योगिकी की संख्या का विकास शामिल है। छात्रों को मछलीघर, मत्स्य खाद्य उत्पादन इकाई आदि की यात्रा के अलावा सजावटी मछली प्रजनन इकाई का भी दौरा करवाया गया था। युवाओं के साथ प्रधान शिक्षिका और अन्य शिक्षकों ने भी इस यात्रा का आनंद लिया और संस्थान के विस्तार और प्रशिक्षण सेल द्वारा पूरे कार्यक्रम को संचालित करने के तरीके पर अपनी संतुष्टि व्यक्त की, और निकट भविष्य में ऐसी शैक्षिक यात्रा के लिए और अधिक छात्रों को भेजने की इच्छा व्यक्त की।

ओडिशा सरकार के मत्स्य अधिकारियों के लिए "जीआईएस और स्थानिक योजना" पर प्रशिक्षण

ओडिशा सरकार के मत्स्य अधिकारियों के लिए "जीआईएस और स्थानिक योजना" पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन 18 फरवरी 2019 से 20 फरवरी 2019 के बीच भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय



मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर में किया गया था। प्रशिक्षण कार्यक्रम संयुक्त रूप से ओडिशा-वर्ल्डफिश प्रोरम और भाकृअनुप-केंद्रीय

अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर द्वारा आयोजित किया गया था। इस 3 दिनों के प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 9 प्रतिभागी शामिल थे, जिसमें ओडिशा मत्स्य विभाग की चार महिला प्रतिभागी



भी थी। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम ने जीपीएस, गूगल अर्थ और क्यू.जी.आई.एस के संचालन के अनुभव पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया। बिंदु, रेखा, बहुभुज और विषयगत मानचित्र बनाने की प्रक्रिया पर भी जोर दिया गया है। प्रशिक्षण के तहत सूचना के विभिन्न प्रकार के मानचित्रों में एकीकृत करने की प्रक्रिया को भी सिखाया गया। प्रशिक्षण की प्रक्रिया में मानचित्र के आवश्यक डिजाइन के निर्यात की प्रक्रिया को भी सिखाया गया था।



प्रशिक्षण कार्यक्रम संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के दास के मार्गदर्शन में शुरू किया गया था। श्री संजीव कुमार साहू और डॉ. पी. के. परिदा इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के समन्वयक थे। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में वर्ल्ड फिश के जीआईएस और स्थानिक नियोजन विशेषज्ञ डॉ. श्यू जियाउ टेह को भी जीआईएस विशेषज्ञ के रूप में शामिल थी। समापन समारोह में, संस्थान के निदेशक, की अध्यक्षता में, प्रतिभागियों ने अपने



अनुभवों को साझा किया और उल्लेख किया कि, बेहतर परिणाम देने के लिए अधिक अभ्यास की आवश्यकता है। उन्होंने भविष्य में राज्य स्तर पर जीआईएस योजना के विकास के लिए संस्थान की मदद के लिए भी अनुरोध किया।

संस्थान के कोच्चि केंद्र में अन्तर्स्थलीय मत्स्य विकास पर राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड प्रायोजित कौशल विकास कार्यक्रम

संस्थान के कोच्चि केंद्र ने आनेवाले नये मछुआरों के लिए भाकृअनुप, केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोच्चि परिसर में 20 से 22 फरवरी 2019 तक राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड प्रायोजित कौशल विकास कार्यक्रम का आयोजन किया ताकि मछली उत्पादन में वृद्धि और उनकी आजीविका आय में वृद्धि हो सके। इस कार्यक्रम में मात्स्यिकी उत्पादन के विभिन्न क्षेत्रों के 50 मछुआरों जैसे कि भूमि आधारित मछली उत्पादकों, छोटे पैमाने पर मछुआरों और उद्यमियों, ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ. वी.वी.सुगन, पूर्व निदेशक,



भाकृअनुप, केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर और पूर्वअतिरिक्त माहनिदेशक (अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी) ने 20 फरवरी 2019 को किया। उन्होंने कहा कि स्थिरता के परिदृश्य में मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन और जलीय कृषि में विविधीकरण की आवश्यकता पर जोर दिया। राज्य के मत्स्य विविधता से समझौता किए बिना समुद्री मत्स्य पालन क्षेत्र में। डॉ. रानी पलानीस्वामी, अधिकारी-प्रभारी, संस्थान के कोच्चि केंद्र ने मछुआरों



को सूचित किया कि केरल के अंतर्स्थलीय जल से आय सृजन के लिए संस्थान नवीन जलीय कृषि प्रौद्योगिकियां प्रदान करता है। इस कार्यक्रम में संस्थान के प्रौद्योगिकियों पर, पेन और केज आधारित मछली उत्पादन प्रणाली, भूमि आधारित मछली उत्पादन प्रणाली,

सरकार प्रायोजित योजनाएं और सब्सिडी और बैंकों से वित्तीय सहायता से संबंधित सत्र शामिल थे।

डॉ. दीपा सुधीसन और डॉ. थैकम थेरसा पॉल ने क्रमशः संस्थान की प्रौद्योगिकियों और भूमि आधारित मछली उत्पादन प्रणालियों पर सत्र लिया और अंतर्स्थलीय मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए विभिन्न तकनीकों और प्रौद्योगिकियों पर जोर दिया। मछुआरों को कोट्टायम जिले के पीरवम में पिंजरो का एक क्षेत्र स्तरीय प्रदर्शन करने का मौका भी दिया गया था। विभिन्न आधुनिक तकनीकों में मछुआरों को पर्याप्त प्रशिक्षण दिया गया और उन्होंने उपयुक्त प्रौद्योगिकियों को अपनाने के लिए सकारात्मक प्रतिक्रिया दी है। कार्यक्रम में श्री एस. मनोहरन, मुख्य तकनीकी अधिकारी, श्रीमती उषा उत्रीथन, तकनीकी अधिकारी और अन्य सहायक कर्मचारी शामिल थे।

संस्थान ने सुंदरबन में "नहर मछली पालन विकास" और "आर्द्रभूमि मत्स्य पालन विकास" पश्चिम बंगाल के मीडिया बॉर, गोबरडांगा, में जन जागरूकता शिविर का आयोजन किया।

सुंदरबन में "नहर मछली पालन विकास" और "नहर मत्स्य पालन विकास" पर 2-दिवसीय जन जागरूकता शिविर मीडिया बैर, गोबरडांगा, पश्चिम बंगाल में क्रमशः 23 और 25 फरवरी, 2019 को अनुसूचित जाति उपपरियोजना (SCSP) कार्यक्रम के तहत आयोजित किए गए। इन दो कार्यक्रमों में कुल 750 किसानों ने भाग लिया, जिनमें से 86% अनुसूचित जाति समुदाय और 12% आदिवासी किसान थे। सुंदरबन, गोसाबा द्वीप, गांव पाखीरला में कार्यक्रम में लगभग 300 किसानों ने भाग लिया था, जहां भुवनेश्वर, ओडिशा के



24 नंबर के रोटेरियन ने संसाधन व्यक्तियों के रूप में काम किया, जो स्वयं को कम पढ़े लिखे गरीब लोगों सामाजिक उत्थान के लिए विभिन्न सामाजिक गतिविधियों में निस्वार्थ रूप करते हैं। उन्होंने आजीविका सुधार के लिए किसानों को संबोधित किया और उन्हें अपने अतिरिक्त आजीविका बढ़ाने के लिए भाकृअनुप, केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान की प्रौद्योगिकियों का उपयोग करने और अपने इलाकों में प्रचलित कुपोषण को दूर करने के लिए प्रेरित किया। पखिराला में किसानों को संबोधित करते हुए, संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास ने किसानों से आग्रह किया कि वे मत्स्य पालन बढ़ाने के

लिए अपने क्षेत्रों में उपलब्ध अप्रयुक्त मीठे पानी के छेत्र के विकास के लिए भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान द्वारा दिये गये ज्ञान और समर्थन से लाभान्वित होने के लिए आगे आए। उन्होंने महिला प्रतिभागियों को सजावटी मछली पालन के विकास में शामिल करने के लिए भी आत्मसात किया, जिसके लिए संस्थान नियमित रूप से बैच-वार के आधार पर आवश्यकता-आधारित प्रशिक्षण सहायता प्रदान करेगी। जागरूकता शिविर में कृषक क्लब के सचिव श्री



कुमारेण बिस्वास, पखिराला, श्री बाबू सरकार, उप-प्रमुख, पंचायत समिति, श्री रवीन्द्रनाथ सरदार, पंचायत सदस्य, श्री शिवेंद्रनाथ मृधा, पंचायत सदस्य, श्री समीर मंडल, सचिव, युवा कल्याण समिति, पाखीरला ने किसानों को संबोधित किया और उनसे संस्थान के वैज्ञानिकों और रोटैरियन द्वारा, साझा किए गए ज्ञान का उपयोग करने का अनुरोध किया। अंत में, संस्थान के निदेशक और रोटैरियंस ने किसानों को पौधे वितरित किए।

एक अन्य जन जागरूकता शिविर मीडिया बिल, गोबरडांगा, उत्तर 24 परगना, पश्चिम बंगाल में 25 वें फरवरी, 2019 को वेटलैंड फिशरीज



डेवलपमेंट पर एससीएसपी कार्यक्रम के तहत आयोजित किया गया था, जहां 82% अनुसूचित जाति समुदायों और 13% अनुसूचित जनजाति समुदायों के सहित 450 किसान शिविर में शामिल हुए। सीबा किसान समिति, गोबरडांगा और फिशर्स कोऑपरेटिव सोसाइटी, मीडिया वील ने वील साइट पर शिविर की व्यवस्था के लिए अच्छी पहल की। शुरुआत में, संस्थान के विस्तार और प्रशिक्षण सेल, प्रभारी, डॉ. ए. के. दास ने किसानों का आह्वान किया कि वे इस तरह के प्रशिक्षण शिविर का लाभ प्राप्त करने के लिए आगे आएँ और

उत्पादकता बढ़ाने के लिए परिलक्षित होने वाले पारिस्थितिक तंत्र और उनके कार्यों के संबंध में अपने ज्ञान के अंतर को समाप्त करें। यहां तक अनप्रयुक्त जल निकायों को भी ग्रामीण लोगों की आजीविका पूर्ती के लिए मत्स्य पालन आधारित मछली पालन के तहत लाया जाना



चाहिए। प्रधान वैज्ञानिक संजीव कुमार मन्ना ने जल कृषि में मछलियों के कीट और रोग के संक्रमण से उत्पन्न समस्या का मुकाबला करने के लिए मत्स्य पालन में रसायनों के विवेकपूर्ण उपयोग पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र में एंटीबायोटिक दवाओं के उपयोग को तत्काल प्रभाव से रोका जाना चाहिए। इस क्षेत्र में बड़े बाढ़कृत आद्र संसाधनों के साथ-साथ सजावटी मछली पालन प्रणाली के विकास और मत्स्य कृषको/ मछुआरों के हितों के लिए मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए विशाल गुंजाइश को ध्यान में रखते हुए भविष्य में प्रतिभागियों के छोटे समूह में अधिक विस्तृत प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता है। भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान इस क्षेत्र के किसानों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को ऊपर उठाने के लिए सभी संभव प्रशिक्षण का समर्थन करता है, जो इस इलाके के स्थानीय किसान क्लब और फिशर्स सहकारी समितियों के सहयोग से आने वाले दिनों में होगा।

पुलवामा हमले पर संस्थान में कैंडल मार्च

14 फरवरी 2019 को, जम्मू श्रीनगर राष्ट्रीय राजमार्ग पर सुरक्षा कर्मियों को ले जाने वाले वाहनों के एक काफिले पर भारत के पुलवामा जिले के लेथपोरा (अवंतीपोरा के पास) में एक वाहन-जनित आत्मघाती



हमलावर ने हमला किया। हमले में 40 केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के कर्मियों और हमलावर की मौत हो गई। पूरे भारत में विरोध प्रदर्शन और कैंडल लाइट मार्च आयोजित किए गए। डॉ. बि. के.



दास, निदेशक और समस्त कर्मचारी, भाकृअनुप -केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसन्धान संस्थान, बैरकपुर ने इस हमले की निंदा की और पीड़ितों और उनके परिवारों के साथ एकजुटता व्यक्त करते हुए संस्थान में कैंडल मार्च किया और शहीदों की याद में दो मिनट का मौन रखा। अपनी सांत्वना व्यक्त करते हुए सभी कर्मचारियों ने शहीदों को नमन करते हुए शांति और अहिंसा बनाये रखने की अपील भी की।



महत्वपूर्ण कार्यकलाप

- जनजाति उप योजना के तहत गुजरात के नर्मदा जिले के बोरिद्रा गाँव में दिनांक 28-29 जनवरी 2019 को खुला जल क्षेत्रों में घेरे में मछली पालन (पेन एवं पिंजरा) पर एक बड़े पैमाने पर जागरूकता शिविर का आयोजन किया।
- संस्थान ने दिनांक 8 फरवरी 2019 को राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड द्वारा वित्तपोषित आर्द्रक्षेत्र विकास परियोजना के अंतर्गत रुलही मन में हितधारकों की बैठक आयोजित हुई।
- संस्थान में दिनांक 11 फरवरी 2019 को सेंट स्टीफन विद्यालय, हाबरा के 107 विद्यार्थियों ने एक दिवसीय ओरिएण्टेशन प्रशिक्षण में भाग लिया।
- संस्थान में दिनांक 12 से 18 फरवरी 2019 को रामनगर महाविद्यालय पूर्व मिदनापुर के मात्स्यिकी एवं फार्म प्रबंधन विभाग के 49 स्नातक छात्र-छात्राओं के लिए अंतर्स्थलीय

मात्स्यिकी प्रबंधन पर सात-दिवसीय ओरिएण्टेशन प्रशिक्षण का आयोजन किया गया।

- संस्थान ने दिनांक 15 फरवरी 2019 को बिहार के पूर्वी चंपारण जिले के कररिया मन में मत्स्य फसल मेला का आयोजन किया गया जिसमें मीडिया कर्मी और हितधारकों ने भाग लिया।
- संस्थान मुख्यालय, बैरकपुर में दिनांक 16 फरवरी, 2019 से ओड़ीशा के डेंकनाल जिले के 104 मछुआरों तथा 6 मात्स्यिकी विभाग अधिकारियों को फीड मिल, प्रयोगशाला तथा अन्य मात्स्यिकी कार्यकलापों पर प्रशिक्षण दिया गया।
- संस्थान ने 18 फरवरी, 2019 को इम्फाल में मत्स्य निदेशालय, इम्फाल, मणिपुर के सहयोग से “मणिपुर के खुले जल में मात्स्यिकी प्रबंधन” पर एक दिवसीय परस्पर संवादात्मक कार्यशाला का आयोजन किया।
- संस्थान के वैज्ञानिकों ने दिनांक 20-23 फरवरी, 2019 को राष्ट्रीय कृषि विज्ञान परिसर, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली में आयोजित “14 वीं एग्रीकल्चरल साइंस कांग्रेस ऑन इनोवेशन फॉर गोवर्नमेंट एग्रीकल्चरल ट्रांसफॉर्मेशन” कृषि विज्ञान कांग्रेस में भाग लिया।
- नमामि गंगे परियोजना के तहत कुंभ मेले के दौरान प्रयागराज में कुंभ मेला मैदान में 15000 से अधिक लोगों ने संस्थान की प्रदर्शनी को देखा। श्री नितिन गडकरी, माननीय केंद्रीय नौवहन मंत्री, सड़क परिवहन और राजमार्ग, जल संसाधन, नदी विकास और गंगा कायाकल्प, ने मंडप का दौरा किया। इस मंडप में प्रदर्शनों के माध्यम से गंगा नदी की पुनर्स्थापना के लिए भारत सरकार के ‘नमामि गंगे’ कार्यक्रम के तहत चल रही विभिन्न गतिविधियों के बारे में बताया गया।
- संस्थान ने 22-25 जनवरी, 2019 के दौरान चेन्नई में बीआरक्यूसीओएन, चेन्नई द्वारा आयोजित एक प्रदर्शनी में भाग लिया, जो कि सोसाइटी ऑफ कोस्टल एक्वाकॉल्टर एंड फिशरीज (एससीएफआई) और आईसीएआर-सीआईबीए द्वारा आयोजित किया गया था।
- संस्थान ने कृषि कुंभ, 2019, गांधी मैदान, मोतिहारी में 9-11 फरवरी, 2019 तक प्रदर्शनी में भाग लिया। 1000 से अधिक किसानों और मछुआरों ने संस्थान के स्टॉल का दौरा किया। माननीय केंद्रीय कृषि और किसान कल्याण मंत्री ने संस्थान मंडप का दौरा किया।
- संस्थान ने बैरकपुर छावनी RCTC ग्राउंड में पूर्व सेना की रैली के दौरान 10 फरवरी, 2019 को एक प्रदर्शनी में भाग लिया।
- संस्थान ने 14-16 फरवरी, 2019 के दौरान आरकेएमआरआरआई, बेलूर में शष्य श्यामला कृषि विज्ञान

केंद्र द्वारा आयोजित प्रौद्योगिकी सप्ताह और जिला कृषि मेले के दौरान एक प्रदर्शनी में भाग लिया।

- संस्थान ने 18 से 19 फरवरी, 2019 तक भुवनेश्वर के भाकृअनुप-केंद्रीय मीठा जल जीवपालन संस्थान, कौसल्यागंगा में "भारत के जनजातीय किसानों के लिए आजीविका विकल्प के रूप में एकाकल्बर पर राष्ट्रीय कार्यशाला" के साथ आयोजित एक प्रदर्शनी में भाग लिया।
- संस्थान ने 20-23 फरवरी, 2019 के दौरान राष्ट्रीय कृषि विज्ञान परिसर, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली में राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली और भाकृअनुप-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा आयोजित XIV कृषि विज्ञान कांग्रेस के साथ एक प्रदर्शनी में भाग लिया।

अंतर्राष्ट्रीय सहयोग

डॉ. पी. के. परिडा, वैज्ञानिक ने कॉक्स बाजार, बांग्लादेश में "ड्राई फिश मैटर्स" पर स्कूपिंग कार्यशाला में भाग लिया।

मानितोबा विश्वविद्यालय, एसएसएचआरसी के वित्तीय सहयोग से "ड्रायफिश मामलों: दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशिया में सूखे मछली की सामाजिक अर्थव्यवस्था को बढ़ाने के लिए दक्षिण और दक्षिण पूर्व



एशिया में मैपिंग" पर एक बहु-सहायक और बहु-देशीय परियोजना पर काम कर रहा है। भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, पश्चिम बांगाल में अंतर्स्थलीय मत्स्यपालन और शीतकालीन बेगनेट मत्स्य पर काम कर रहा है, जो शुष्क मत्स्य (ड्राईफिश) उत्पादन में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। लघु उद्योग के लिए इस संस्थान के योगदान के आधार पर उन्होंने इस को अपनी परियोजना की कार्यशाला में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया। डॉ. पी. के. परिडा ने संस्थान की ओर से 22 से 25 फरवरी 2019 के दौरान कॉक्स बाजार, बांग्लादेश में स्कूपिंग कार्यशाला में भाग लिया। विभिन्न देशों / समूहों द्वारा अलग-अलग टीम सदस्यों द्वारा मूल्य श्रृंखला अध्ययन को प्रस्तुत किया। कार्यशाला में आंकड़े संग्रह पर नैतिक मुद्दों पर चर्चा की

गई। आंकड़ों का प्रारूप और आवश्यक जानकारी पर विस्तृत रूप से चर्चा की गई थी।



डॉ. अपर्णा रॉय, वैज्ञानिक ने वर्ल्ड फिश सेंटर, पिनांग, मलेशिया में 'मुसिक' (MuSIC) कार्यशाला में भाग लिया

एशिया में छोटे स्तर पर मात्स्यिकी (स्माल-स्केल फिशरीज या एसएसएफ) समुद्री और अंतर्स्थलीय मत्स्य क्षेत्र दोनों की रीढ़ है। लाखों मछुआरे छोटे पैमाने पर मत्स्य गतिविधियों में शामिल होते हैं, आमतौर पर स्थानीय और घरेलू बाजारों के साथ-साथ उपभोग के निर्वाह के लिए मछली और मछली उत्पादों की आपूर्ति शामिल होती है। स्माल-स्केल फिशरीज एक असंगठित क्षेत्र है, जिसमें कुछ सार्थक अवसरों के साथ बहुत सारी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। स्माल-स्केल फिशरीज स्थानीय के साथ-साथ राष्ट्र की अर्थव्यवस्था में बहुत योगदान दे रहा है लेकिन, यहाँ मत्स्य पैदावार ज्यादातर समय पता नहीं चलती है और देशों के मछली उत्पादन के आंकड़ों में परिलक्षित नहीं होती है। छोटे पैमाने के मत्स्य पालन क्षेत्रों की ताकत, कमजोरी, चुनौतियों और अवसरों को अक्सर नीति निर्माताओं द्वारा अनदेखा किया जाता रहा है, स्माल-स्केल फिशरीज के मुद्दे और महत्व को उचित रूप से प्रस्तुत नहीं किया जाता है। स्माल-स्केल फिशरीज स्थानीय आबादी को खाद्य सुरक्षा और पौष्टिक पोषण प्रदान कर रहा है और गरीबों को रोजगार के अवसर भी प्रदान कर रहा है। इसलिए, इसकी चुनौतियों को कम करने के लिए और एशियाई देशों में 'स्थायी लघु-मत्स्य मात्स्यिकी को सुरक्षित करने के लिए स्वैच्छिक दिशानिर्देशों' को बढ़ावा देने के लिए वर्ल्डफिश सेंटर द्वारा 18-23 फरवरी, 2019 के दौरान एक बहु-हितधारकों की सूचना और संचार (म्यूसिक) कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह संयुक्त रूप से पिनांग, मलेशिया; वर्ल्डफिश सेंटर; और यूएन / एफएओ, रोम द्वारा प्रायोजित और आयोजित किया गया था।

इस कार्यशाला में भाग लेने वालों का चयन भारत, बांग्लादेश, म्यांमार, कंबोडिया, फिलीपींस, मलेशिया से किया गया था, जहाँ वर्ल्डफिश पहले से ही छोटे पैमाने पर मत्स्य और जलीय कृषि में विभिन्न हितधारकों के साथ कार्य कर रहा है। तीन अलग-अलग क्षेत्रों के छह देशों के कुल सोलह प्रतिभागी थे। सरकारी संस्थानों से मत्स्य अनुसंधानकर्ता; मछली पकड़ने के समुदाय और पत्रकार (प्रिंट, टीवी, रेडियो, ऑनलाइन पत्रिकाओं इत्यादि) आदि के साथ मिलकर काम करने वाले एनजीओ के कार्यकर्ता भी इसमें सम्मिलित थे। जिसके निम्नलिखित उद्देश्यों थे :

1. एशिया में लघु-स्तरीय मत्स्य पालन (एसएसएफ) के लिए बहु-हितधारक सूचना और संचार गठबंधन बनाने की दिशा में पहला कदम शुरू करने के लिए,

2. वर्ल्डफिश में नागरिक समाज और मीडिया के साथ किए जा रहे अनुसंधान और नीति निर्माणों को साझा करना,

3. आजीविका, खाद्य और पोषण सुरक्षा में सुधार के अपने मूल संदेश को साझा करने के लिए राष्ट्रीय / स्थानीय मत्स्य दृश्य के बारे में नागरिकों के लिए एक नए सक्रिय आउटरीच बनाने के लिए।



कार्यशाला एक संवादात्मक और सहभागितापूर्ण तरीके से आयोजित की गई और चयनित प्रतिभागियों के ज्ञान और क्षमताओं पर अधिक ध्यान दिया गया। देश क्षेत्र समूह (शोधकर्ता, कार्यकर्ता और मीडिया) पहले से ही अपने संबंधित देशों में एक एक्सपोजर विजिट (उस क्षेत्र में जहां वर्ल्ड फिश काम कर रहे हैं) के माध्यम से कार्यशाला से पहले बातचीत की थी। देश के समूहों, विभिन्न क्षेत्रों के समूहों ने एसएसएफ के बारे में अपने ज्ञान और विचारों को साझा किया। एक फील्ड एक्सपोजर विजिट और एक कम्युनिटी इंटरैक्शन मीट का भी आयोजन किया गया था जो अच्छी तरह से योजनाबद्ध था और बहुत फायदेमंद था। कार्यशाला के दौरान लघु-स्तरीय मत्स्य पालन, खाद्य सुरक्षा और मछली की खपत के बीच संबंधों की समझ, सराहना और पूछताछ पर ध्यान केंद्रित किया गया था।

भारत से डॉ. अपर्णा राय, वैज्ञानिक, भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर; सुश्री मैरिएन, एसिस्ट, निदेशक, दक्ष फाउंडेशन, और श्री टी.ए. अमीरुद्दीन, वरिष्ठ लेखक (विकास पत्रकार), स्कॉल.इन., ने कार्यशाला में भाग लिया।

कार्यशाला के परिणाम

- खाद्य सुरक्षा, पौष्टिक पोषण और एसएसएफ दिशानिर्देशों के संदर्भ में शोधकर्ता, गैर सरकारी संगठन के कार्यकर्ताओं और मीडिया कर्मियों के बीच भारत में लघु-स्तरीय मत्स्य पालन की प्रासंगिकता के बारे में अधिक जागरूकता और समझ,
- प्रतिभागियों के बीच वर्ल्डफिश अनुसंधान और गतिविधियों का बेहतर ज्ञान है, और इसका उपयोग संबंधित पेशेवर क्षेत्रों में करना,

- छोटे पैमाने पर मछली पकड़ने के मुद्दों पर उचित नीति और कार्रवाई के उद्देश्य से सूचना साझा करने और संचार के लिए एक पैन-एशियाई गठबंधन बनाने की पहल.

यह कार्यशाला लघु-मछली पालन में लिप्त विभिन्न हितधारकों, मत्स्य-कृषक, शोधकर्ता, गैर-सरकारी संस्थानों के कार्यकर्ता, मीडिया, प्लानर्स और नीति निर्माता सभी सेक्टर समूहों के बीच एक बेहतरीन जुड़ाव पैदा कर सकते हैं और भारत में लघु-स्केल मत्स्य पालन की विभिन्न चुनौतियों और मुद्दों को संबोधित कर सकते हैं।

नयी बहाली (तकनीकी सहायक)

इस माह संस्थान में तीन तकनीकी सहायक (T-3) की नई बहाली हुई है



श्री अविशोक साहा, (तकनीकी सहायक) की तैनाती 7 जनवरी 2019, को संस्थान में हुई। श्री साहा कृषि विस्तार में परास्नातक है, संस्थान में बहाली के पूर्व श्री साहा उत्तर बंगा कृषि विश्वविद्यालय से पीएचडी कर रहे थे।



मोहम्मद नईम, (तकनीकी सहायक) की तैनाती फरवरी 2019, को संस्थान में हुई। मोहम्मद नईम ने गणित में स्नातक किया है, और भाकृअनुप- राष्ट्रीय पटसन एवं संवर्गी रेशा प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान में T-1 के रूप में प्रयोगशाला आधारित कार्य में 6 वर्ष का अनुभव अर्जित किया है।



श्री राकेश पाल, (तकनीकी सहायक) की तैनाती 20 फरवरी 2019, को संस्थान में हुई। श्री पाल भूगोल-शास्त्र में स्नातक है, और सूचना प्रौद्योगिकी और अनुप्रयोग में डिप्लोमा हासिल किया है। श्री पाल को गृह मंत्रालय, भारत सरकार में 6 वर्ष का अनुभव प्राप्त है।

सम्पादक मंडल की तरफ से

नए बहाल तकनीकी सहायको को बधाई। आंतकवादियों द्वारा की गयी कायराना हरकत से पूरा संपादक मंडल अत्यधिक दुखी और छुब्य है इस तरह की गयी हरकत का पुरजोर विरोध करता है और परमपिता परमेश्वर से शहीदों के परिवार के लिए प्रार्थना करता है।

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मोर्य, गणेश चंद्र, राजीव लाल, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

संकलन एवं सम्पादन सहायता: मो. कासिम फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, (आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन) बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120 भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91 फैक्स: +91-33-25920388 ई-मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in

ISSN0970-616X

सिफरी मासिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुनः उत्पन्न नहीं की जा सकती है